पीलोकोड ग्राम पंचायत, केरल की सफलता की कहानी-
प्रथम निर्मल ग्राम पुरस्कार की पुरस्कार विजेता

समग्र स्वच्छता के लिए जनता आंदोलन

भूतकाल:

पीलोकोड करनारागोड जिले के निलेश्वर विकास ब्लाक में आर्थिक रूप से पिछड़ी ग्राम पंचायत है। 1991 की जनगणना के अनुसार 4083 परिवारों और 21210 की आबादी वाली यह पंचायत 26.77 वर्ग कि०मी० के क्षेत्र में फैली है। यहाँ अधिकतर आबादी कृषि श्रमिकों, बीड़ी कामकारों और पारम्परिक कार्य करने वालों की है। आय और जीवन-शैली के न्यूनतम स्तर के कारण स्वच्छ शौचालय का उपयोग करना यहाँ उपेक्षित रहा है। यह इस पृष्ठभूमि में था कि पंचायत समिति ने इस पक्के इरादे से समग्र स्वच्छता के लिए जनता का आंदोलन शुरू करने का निर्णय किया कि लोगों की वास्तविक भागीदारी से अभावों और वित्तीय संकटों पर विजय प्राप्त की जा सकती है 1990 में प्रारंभ किए गए बहुत अधिक सफल समग्र शैक्षिक अभियान से जिले सबक ने पंचायत समिति में पूरा विश्वास पैदा किया कि प्रभावी संप्रेषण से आवश्यकता और प्रोत्साहन को जेनरेट किया जा सकता है।

प्रारंभिक चरण:

पंचायत ने राजनैतिक दलों, स्वैच्छिक संस्थाओं, यूथ क्लब, सांस्कृतिक संस्थानों, महिलाओं के फोरम और समग्र स्वच्छता के लिए समुदाय आधारित अभियान चलाने के उपाय पर विचार-विमर्श के ओपिनियन लीडरों की एक बैठक आयोजित की जिसमें समुदाय विशेष रूप से महिलाएँ और युवा योजना की तैयारी करने, योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने, मानिटर करने और मूल्यांकन करने संबंधी सभी स्तरों पर पूरी भूमिका निभाएँगे। बैठक ने संकल्प पारित किया गतिविधियों को सक्रिय करने के लिए वार्ड के स्तर पर लोगों की समिति बनाई जाए। अभियान में जान डालने के लिए 25 दिसम्बर 1995 में सभी वार्डों में वार्ड समिति की बैठक एक साथ आयोजित की गई। वार्ड स्तरीय बैठक में 100 से 200 तक की उपस्थिति की जिसमें 60 प्रतिशत महिलाएँ थी। प्रारंभिक गतिविधियों, मोबिलाइजेशन और स्वास्थ्य शिक्षा गतिविधियों और निर्माण गतिविधियों वाली कार्यवाही की प्रारूप योजना पंचायत स्तर पर बहुत अधिक विचार-विमर्श करके तैयार की गई। पंचायत ने स्वच्दता पर स्टेटस पेपर तैयार करने के और लाभार्थियों की पहचान करने के लिए घर-घर जाकर सर्वे करने का निर्णय किया।

अवालकोट्टम (पड़ोसी से एकत्रित होना):

30 से 40 पड़ोसी परिवार इकट्ठा होते रहे। इस प्रक्रिया में एक नई निचले स्तर की संस्था बनाई गई जिसे कुटुम्ब सादास(परिवारों का इकट्ठा होना)के रूप में जाना गया। यह एक ऐसा फोरम है जहाँ शाम को 70 से 120 महिलाएँ इकट्ठी होती हैं और सामान्य हित के मामलों पर विचार करती हैं कुटुम्ब

सादास को अभियान के रूप में आयोजित किया गया तथा प्रारंभिक स्तरों पर 90-100 ऐसी पड़ोसी बैठकें आयोजित की गईं। इन परिवारों का कलस्टर बाद में आयालकोट्टम में बदल गया जो कार्यक्रम-कार्यान्वयन को माइक्रो कार्य-प्रणाली पर आधारित था।

<u>बेसलाइन सर्वे:</u>

सर्वे दलों में प्रत्येक पड़ोसी से सदस्य शामिल किए गए। दल के लीडर को सर्वे फार्मेट का उपयोग करते हुए एक दिवसीय ''प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण'' दिया गया। सर्वे पद्धति की वैधानिकता को ध्यान में रखते हुए 21 जनवरी, 1996 को एक पायलट सर्वे आयोजित किया गया। इसके बाद दल के लीडर ने वार्ड स्तर पर दल के सदस्यों के लिए ओरिएंटेशन प्रशिक्षण का आयोजन किया। इसके साथ-साथ सर्वे प्रक्रिया में लोगों/समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए राजनैतिक दलों, युवा/सांस्कृतिक/स्वैच्छिक संस्थाओं और महिलाओं के संगठनों की बैठक की एक श्रंखला आयोजित की गई। गणतंत्र दिवस समारोह पर 26 जनवरी को सर्वे आयोजित किया गया। पूरा दिन चलने वाले इस सर्वे के आयोजन में वास्तविक रूप से 74 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस उच्च कोटि के अभियान से पैदा हुआ उत्साह ऐसा था जिससे इसमें प्रत्येक परिवार शामिल हुआ, अधिक से अधिक लोगों के सहयोग दिया, परिणाम स्वरूप इसमें बहुत अधिक संख्या में लोगों ने भाग लिया।

<u>पर्यावरण अनुकूलन:</u>

पंचायत के माध्यम से स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने के लिए लोगों से अनुरोध करते हुए एक जागरूकता निर्माण प्रक्रिया शुरू की गई।

<u>मुख्य घटनाएँ:</u>

15/12/95	: पंचायत विकास समिति के गठन के लिए जनता के प्रतिनिधियों, राजनैतिक दलों के प्रतिनिधयों, युवाओं, महिलाओं और सांस्कृतिक संस्थाओं की बैठकें।
18/12/95	: सांस्कृतिक/युवाओं/स्वैच्छिक संस्थाओं की बैठक।
25/12/95	: वार्ड विकास समिति का गठन।
6/1/96	: वार्ड संयोजकों की बैठकें।
12/1/96	: पंचायत स्तरीय समीक्षा बैठक।
30/12/95 से 10/1/96	: कुटुम्बा सदासु(पड़ौसी बैठक)
19/1/96	: पंचायत स्तरीय समीक्षा
21:1:96	: दल के 150 लीडरों के लिए सर्वे प्रशिक्षण
21/1/96 से 24/1/96	: वार्ड स्तरीय ओरिएंटेशन प्रशिक्षण
26/1/96	: फील्ड-सर्वे-दल को मजबूत बनाना
27/1/96	: वार्ड स्तरीय मजबूतीकरण

28/1/96 : पंचायत स्तरीय मजबूतीकरण

30/1/96 : स्वच्छता आवश्यकताओं की घोषणा जैसा सर्वे में बताया गया है।

1 से 7 फरवरी : परियोजना प्रस्ताव की तैयारी करना

19 फरवरी :सर्वे विश्लेषण एवं कार्यक्रम पर कार्यवाही के संबंध में जनता को अवगत कराना।

<u>सर्वे विश्लेषण:</u>

सर्वे का निष्कर्ष निम्न प्रकार है:-

- 2020 परिवारों के पास स्वच्छ शौचालय नहीं थे जिसमें 1900 बीपीएल परिवार थे।
- 24 सार्वजनिक संस्थानों के पास स्वच्छता सुविधाएँ नहीं थी जिन्हें बताया जा सके।
- 4 मुख्य बाजारों को बुनियादी स्वच्छता और पर्यावरण उपशयन के लिए सुविधाओं की आवश्यकता थी।
- 874 ओ.डी.वेल्स में चार दिवारी नहीं थी
- स्टोर्म वाटर ड्रेनेज के लिए 1155 कि०मी० सड़क को साइड ड्रेन की आवश्यकता थी।
- 3000 कि०मी० परिवारों को सोक पिट, कूड़ादान, वाशिंग प्लेटफार्म और रसोई स्वच्छता सुविधाओं की जरूरत थी।
- 21 तालाबों को सुरक्षा कार्य की आवश्यकता थी।

सर्वे के विश्लेषनात्मक अध्ययन का परिणाम समिति द्वारा तैयार किया गया है। उस पर पंचायत समिति ने सरकार की सहायता के लिए एक परियोजना प्रस्तुत की है।

<u>परियोजना के घटक:-</u>

क्रम सं०	गतिविधि	कुललागत	जीओआई	जीओके	लाभार्थी
1.	1900 दो पिट वाले शौचालयों का निर्माण	47.50	19.00	19.00	9.50
2.	मेसनों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण	0.15	0.075	0.08	----
3.	जागरूकता शिविर एवं पर्यावरण सृजन	0.50	0.25	0.25	-----
	योग	48.15	19.325	19.35	9.50

ग्रामीण रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार ने अपनी विज्ञप्ति सं० डब्ल्यू, 11023/11/96 सीआरएसपी(एमवी) दिनांक 8/10/96 द्वारा इस परियोजनाके अनुमोदन की जानकारी दी है। केरल सरकार ने रू० 48.15 लाख की राशि जीओ(आर टी)/सं० 423/96/आरडीडी दिनांक 28/11/96 द्वारा उपलब्ध की है। उपरोक्त में रू० 19.325 की राशि केंद्र का हिस्सा थी, रू० 19.325 लाख की राशि राज्य का हिस्सा थी और रू० 9.5 लाख की राशि पंचायत/लाभार्थी अंशदान था।

<u>कार्यान्वयन</u>

पंचायत के समाज के विभिन्न वर्गों के साथ गंभीर विचार-विमर्श वाले सत्र की एक श्रृंखला का आयोजन किया और निम्नलिखित कार्यान्वयन नीति तैयार की:-

- सभी राजनैतिक दलों को शामिल करते हुए पंचायत विकास समिति का गठन करना।
- समग्र लीडर विकास समिति की एक सहयोगी भूमिका होगी।
- अथालकोट्टम के माध्यम से लोगों में उत्साह पैदा करना एवं सामुदायिक जागरूकता गतिविधि बढ़ाना।
- कार्यक्रम कार्यान्वयन के लिए उचित संगठनात्मक ढांचा तैयार करना।
- परिवर्तन एजेंटों के रूप में महिलाओं एवं युवाओं की भूमिका पर ध्यान देना।
- सामाजिक संप्रेषण को महत्व देते हुए स्वास्थ्य ओरिएंटेशन कार्यक्रम।
- चिकित्सकों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और सामाजिक गतिविधियों की सृजनात्मक वर्कशाप में स्वास्थ्य शिक्षा के लिए मोड्यूल तैयार करना।
- स्वच्छता और स्वास्थ्य हस्तक्षेप, विशेष रूप से बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान देना।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम को लक्ष्य संवेदनशील बनाने एवं प्रोत्साहित करने का होना चाहिए।
- लाभार्थियों को तकनीक का चयन करने की छूट देते हुए 1900 स्वच्छ शौचालयों का निर्माण करना।
- 20 संस्थानिक शौचालय बनाना
- स्वावलंबिता
- स्वयं निर्धारित लोकेशन विशिष्ट आई ई स जो विस्तार से परे हो जाए: आई ई सी विवेक बुद्धि के आयाम खोलेगा।

<u>अनुपूरक गतिविधयाँ-</u> **(कसारागो जिला)**

1. ड्रेनेज मैंपिंग
2. भू विज्ञान अध्ययन(सीईएसएस) केंद्र तिरूअनन्तपुरम की तकनीकी सहायता से पिपल रिसोर्स मैपिंग।
3. सामाजिक-आर्थिक सर्वे

4. माध्यमिक आंकड़े एकत्र करना

<u>पर्यावरण निर्माण</u>

जागरूकता पैदा करने के रूप में परियोजना के कार्यान्वयन के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ शुरू की गई:-

1. वार्ड स्तरीय बैठक

   वार्ड समिति की अध्यक्षता के वार्ड स्तरीय बैठकें प्रत्येक दो सप्ताह में आयोजित की गई। इस बैठक में वार्ड के अंदर सभी गतिविधियों के लिए कार्ययोजना की तैयारी की भी योजना बनाई गई। इन बैठकों में चल रहे कार्यक्रमों की ठीक प्रकार से निगरानी और समीक्षा की गई। इन वार्ड बैठकों में नियोजित मुख्य गतिविधियों को आयालकुट्टम्स द्वारा पूरा किया गया।

2. जागरूकता पैदा करना:

   स्वास्थ्य कक्षाएँ आयोजित करना- स्कूल के बच्चों के लिए प्रतियोगिताएँ-पर्यावरण निर्माण के लिए स्कूल के बच्चों को अग्रसर करना- पोस्टर कैम्प आयोजित करना एवं उन्हें प्रमुख स्थलों पर लगाना- बैनर, स्टिकर लगाना- घर-घर दौरा करना, प्रत्येक व्यक्ति से बात-चीत करना।

3. निर्माण कामगारों को लीडरशिप का प्रशिक्षण देना।
4. सामग्री प्राप्त करने के लिए अयालुकुट्टम्स को सहायता करना।
5. कमजोर तबके की सहायता के लिए स्वैच्छिक कार्य को प्रोत्साहित करना।
6. समस्याओं का पता लगाना और उनके समाधान सुलझााना।
7. निगरानी रखना।

<u>लाभार्थियों की बैठक:</u>

वार्ड स्तर पर लाभार्थियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में परियोजना-प्रस्ताव पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। इस बैठक का उद्देश्य कार्यक्रम-कार्यान्वयन की पूरी प्रक्रिया में उनकी भूमिका के बारे में उन्हें जागरूक करना था।

<u>मेसन प्रशिक्षण शिविर:</u>

मेसनों की एक दिवसीय बैठक अप्रैल मास में आयोजित की गई। इस बैठक में पिट मार्किंग के तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया।75 मेसनों ने बैठक में भाग लिया। यह निर्णय किया गया कि पूरी पंचायत में अभियान स्तर पर मार्किंग की जाए। तीन दिवसीय तकनीकी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में विभिन्न तकनीकी विकल्पों पर विचार-विमर्श किया गया। 96 मेसनों ने इसमें भाग लिया। उन्होंने निर्माण कार्य के लिए सही नेतृत्व दिया।

<u>पिट मार्किंग</u>

यह निर्णय किया गया कि मास मई, 96 में निर्माण गतिविधि शुरू की जाए। पिट-मार्किंग को प्रमुख स्वास्थ्य शिक्षा-सह-पर्यावरण निर्माण प्रक्रिया के रूप में शुरू किया गया। प्रतयेक एनएचजी में एक कौर टीम जिसमें स्वास्थ्य कार्यकर्ता, प्रशिक्षित मेसन और राजनैतिक लीडर थे, ने पिट को मार्क करने में लाभार्थियों को समर्थ बनाया।

<u>निर्माण:</u>

एनएचजी निर्माण प्रबंधन की कार्य करने वाली यूनिटें थी। वार्ड स्वच्छता समिति द्वारा बल्क में सामग्री उपलब्ध कराई गई।

<u>बैनर एवं स्टिकर</u>

बैनर एवं स्टिकर पंचायत की मुख्य गलियों में लगाए गए।

<u>दस्तावेज तैयार करना:</u>

ठीक दस्तावेज तैयार किए गए।

''नाट्टुवेलिचम'' नामक वीडियो दस्तावेज को शैक्षिक उपकरण के रूप में उपयोग किया गया। फोटो दस्तावेज तरीके से तैयार किए गए।

<u>निगरानी करना:</u>

इस प्रक्रिया में निगरानी मकैनिज्म को शामिल किया गया। वार्ड संयोजक एवं वार्ड सदस्य ठीक निगरानी करने के लिए प्राथमिक रूप से उत्तरदायी थे। प्रत्येक वैयक्तिक शौचालय की प्रगति का निर्धारण करने के लिए स्टेज प्रमाणपत्र, राशि के वितरण आदि के लिए प्रयोग किए गए फार्म भी विकसित किए गए। अनुमानित लाभार्थी अंशदान नि०9.50 लाख था। लेकिन वास्तविक अंशदान आश्चर्यजनक रूप से नि० 60/- लाख पहुंच गया था। वास्तविक लागत का विश्लेषण सर्वे का आयोजन एवं मूल्यांकन करके किया गया।

<u>प्रथम चरण की प्रगति:</u>

माननीय मुख्यमंत्री श्री ई.के.नयनार ने 17 नवम्बर, 1997 में अभियान के प्रथम चरण की प्रगति के बारे में जानकारी दी। पंचायत ने इस दिन को 'ग्राम उत्सव' के रूप में मनाया। लोगों ने गर्व के साथ उनके प्रयासों, कठोर परिश्रम और जीत को याद रखने के लिए एक जुलूस भी निकाला। पहला चरण पूरा होने के बाद पंचायत ने निर्णय किया कि परियोजना जिसे राज्य विकास विभाग द्वारा केंद्रीय सरकार के पास अनुमोदन के लिए भेजा गया था। के औपचारिक अनुमोदन की प्रतीक्षा किए बिना दूसरे चरण को शुरू किया जाए। दूसरे चरण का ध्यान स्कूल स्वच्छता कार्यक्रम और ड्रेनेजपर केंद्रित था।

<u>स्कूल स्वच्छता कार्यक्रम:</u>

इस कार्यक्रम का लक्ष्य स्कूल में स्वच्छता और स्कूल के माध्यम से स्वच्छता है। हमने कार्यक्रम को कीमती शिक्षा के लिए एक शिक्षा उपकरण के रूप में नियोजित किया। करके सीखना इस कार्यक्रम का विशिष्ट दृष्टिकोण है। यह कार्यक्रम इस प्रकारसे बल देता है कि छात्र स्वच्छ पर्यावरण के महत्व को समझेंगे और पर्यावरण लोगों और समाज के स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विज्ञानको कैसे प्रभावित करता है। यह पर्यावरण और यह पर्यावरण लोगों एवं समाज के स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विज्ञान पर कैसे प्रभाव डालता है। अंत में यह जागरूकता उसके निजी एवं सामाजिक जीवन में परिलक्षित होगी।

पंचायत के सदस्यों, स्कूल के मुख्य आध्यापकों, स्वैच्छिक संस्थाओं के सदस्यों और पदाधिकारियों की बैठक जुलाई, 1998के अंतिम सप्ताह में आयोजित की गई। इसके बाद स्थानीय चिकित्सकों की अध्यक्षता में चुनिंदा अध्यापकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पेरेन्ट टीचर एसोसिएशन और मदर पीटीए की बैठक कार्यक्रम को सूक्ष्म स्तर पर तैयार करने के लिए आयोजित की गई। सतत जागरूकता कार्यक्रम 8 से 12 अगस्त तक विभिन्न प्रकार से आयोजित किए गए। प्रत्येक संस्थान के अध्यापक, धाम और माता-पिता को छोटे दलों में बाँटा गया और वे परिवारों को स्वच्छ पर्यावरण के महत्व को बताते हुए स्वास्थ्य गीतों और स्लोग्नों को गाकर बस्ती के घरों में गए।

15 अगस्त, 1998 को स्कूल स्वच्छता अभियान की शुरूआत के रूप में मार्क किया गया। सामुदायिक लीडर शिप ने परिसरों की सफाई करने, कूड़ा डालने की पिट का निर्माण करने, पेयजल पोस्ट उपलब्ध कराने प्रत्येक कक्षा में बास्केट और झाडू उपलब्ध कराने की स्कूल आधारित गतिविधियों का आयोजन किया।

इसी सप्ताह में अत्यधिक उत्साह से भरे स्वैच्छिक कार्य किए गए जिसमें 3000 कार्यकर्ताओं ने एकत्रित होकर ही दिन में 6 कि०मी० सड़क ड्रेनेज का निर्माण उचित योजना बनाने एवं सही तरीके से क्षेत्र का फालोअप करने के कारण ही ऐसा करना संभव हो पाया।

<u>माता-पिता</u>

2001 की जनगणना के अनुसार इस जीपी की आबादी 23338 है। इस जीपी को नवम्बर, 1997 से ही पूर्णत: कवर घोषित किया गया है। इस जीपी में इस समय कुल 5103 परिवारों के पास शौचालय हैं। समग्र स्वच्छता अभियान के दौरान फालोअप गतिविधियों की श्रंखला आयोजित की गई।

<u>स्कूल स्वास्थ्य क्लब:</u>

जीपी के पास ग्यारह स्कूल हैं(6 सरकारी स्कूल हैं) जिनमें लड़कों एवं लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालयों की पूरी सुविधाएँ है विशेष रूप से नवयुवतियों के लिए अलग शौचालय हैं। छात्र इन

शौचालयों की बारी-बारी से साफ करते हैं। प्रत्येक स्कूल में छात्र स्वास्थ्य क्लब है जहाँ छात्र इसके सदस्य हैं। स्वास्थ्य क्लब इन शौचालयों को समय पर साफ करने के लिए छात्रों के लिए अनुसूची बनाता है। सभी स्कूल छात्रों को स्वच्छता एवं स्वास्थ्य विज्ञान संबंधी देते हैं। इसके अतिरिक्त छात्रों और जागरूकता के लिए बच्चों में भाषण कौशल और निबंध प्रतियोगिता द्वारा ड्रामा ड्रुप आयोजित किए जाते हैं तथा पीटीए/एमपीटीए के लिए जागरूकता एवं विचार-विमर्श कार्यक्रम भी आयोजित किए जातेहैं। इस जीपी में 21 आँगनबाड़ी हैं। इन सभी आँगनबाड़ियों में शिशु अनुकूल शौचालय सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आँगनवाड़ी सहायक इन शौचालयों की सफाई एवं रख-रखाव करते हैं।

<u>पेयजल-</u>

पंचायत की अपनी परियोजनाओं के अतिरिक्त पेयजल प्रणाली शुरू की गई और 642 ''स्वजलधारा-II'' (आरजीएनडीडब्ल्यूएम) के अंतर्गत कार्य चल रहा है। 981 परिवारों (4338) (लाभार्थी) को लाभ मिलेगा। इससे अच्छी जल रिचार्ज सुविधाएँ भी दी जाती है। प्लान ग्रांट-इन-एड का उपयोग करते हुए पंचायत ने 15 आँगनवाड़ियों और 2 सार्वजनिक स्थानों पर रेन हार्वेस्टिंग यूनिटों का निर्माण किया।

<u>इन्टीग्रेशन</u>

प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कागज की थैलियाँ तैयार करने के लिए और बायो-कम्पोस्ट यूनिट के लिए जिनके लिए परिवार के स्तर पर अलग 'गारबेज बैक होम' प्रैक्टिस को संस्था का रूप दिया गया है, कुदुमबसरी(एनएचजी) यूनिटों को आर्थिक सहायता दी गई। जैविक पदार्थों का परिवार के स्तर पर निपटान किया गया। प्लास्टिक को न जलाने के लिए जागरूकता पैदा की गई जिसका सभी गाँव वालों ने ईमानदारी से अनुपालन किया। 2001 में पंचायत ने एकीकृत विकास के लिए 'वाटर शेड ग्राम सभा' का आयोजन किया। 2003-04 से पेयजल(स्वच्छ वैल) के प्रदूषण को दूर करने के लिए 'वैल अलमीरा' बनाने के लिए परिवारों को आर्थिक सहायता भी दी गई। प्लास्टिक सामग्रियों के दुरूपयोग के विरूद्ध और समग्र स्वास्थ्य के लिए समग्र स्वच्छता से संबंधित सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गए। यूथ क्लबों के बैनर के अंतर्गत स्वच्छता एवं स्वास्थ्य यूनिट(एसएचयू) बनाए गए। टीएससी जिला पंचायत, कसारागोड़ के तत्वाधान में आईईसी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

<u>भविष्य:</u>

अब हमारा लक्ष्य पर्यावरण स्वच्छता पर आधारित 'समग्र स्वास्थ्य के लिए समग्र स्वच्छता' (बसावट सहित) है। भूमि उपयोग, जीवनशैली, वायु में डस्ट के एकत्रिकरण जंगलों के कटाव, एकीकृत विकासमें वाटरशेड प्रबंधन की महत्ता, वाटर-रीचार्ज भी आवश्यकता, घरों में शॉकेज पिट्स के निर्माण, रेनवाटर हार्वेस्टिंग यूनिट, महामारी जैसी बीमारियों आदि में बदलाव मुख्य पहचान बिंदु हैं और हम एकीकृत विषयक योजना को तैयार कर रहे हैं।

<u>स्वराज ट्रॉफी</u>

पालिकॉड ग्राम पंचायत के लोगों को वर्ष 1997-98 के लिए राज्य सतर पर सर्वोत्तम ग्राम पंचायत के लिए स्वराज ट्रॉफी देकर केरल सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

निर्मल ग्राम पुरुस्कार-

पंचायत एनजीपी अपना चयन कराकर एक दुर्लभ स्थान प्राप्त है क्योंकि कवल जीपी (कुल 40 जीआरआई) का देश में वर्ष 2005 में पेयजल आपूर्ति विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारास्वच्छता एवं सफाई प्रैक्टिसों को बढ़ावा देने के लिए (केरल में केवल एक) चयन किया गया है।

आँकड़े:

वार्डों की संख्या: 12 महिला आरक्षण: 4 अनुजाति आरक्षण-I

लोकेशन: 12’12’’ लैटि०75’10’’ लाँग, एचक्यू:कलिकडावु(पीलीकोड), ताल्लुका: हॉसदुर्ग।

निर्वाचन क्षेत्र: संसदीय-कसारगोड़। विधानसभा- त्रिकरीपुर

निष्कर्ष:

क्लबों, स्कूल ब्रिगेडों, एनजीओ, एसएचजी के वरिष्ठ नागरिक क्लब आदि जैसी सामुदायिक स्तरीय संस्थाओं के सक्रिय भाग लेने से खुले में शौच न करने और कूड़ा न डालने के कारण पंचायत की सामान्य स्वच्छता उत्तम है। स्वच्छता अभियान की गति कभी मन्द नहीं पड़ती। प्रत्येक वर्ष पंचायतस्वच्छता के सर्वात्तम वार्ड को ट्राफी भी देती है यह बेहतर स्वच्छता के लिए सभी में प्रतियोगिता की भावना बनाए रखता है।

इस प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियों ने पंचायत की समग्र सफाई में सुधार लाने में सहायता की है और कार्यक्रम को आगे चलकर स्वयं स्थायित्वता प्रदान करने में भी मदद की है।